HB3062 - 1084वें की माँ

लेखिका - महाश्वेत देवी

महाश्वेता देवी एक भारतीय सामाजिक कार्यकर्ता और लेखिका थीं। उनकी प्रमुख कृतियो में 'जंगल के दावेदार', 'नील छवि', 'टैरोडैक्टिल', '1084 की माँ', 'अग्निगर्भ', 'चौटिट मुण्डा और उसका तीर', 'झाँसी की रानी', 'ग्राम बाँग्ला' आदि का समावेश होता है। उन्हें 1996 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

इस उपन्यास में लेखिका ने बंगाल के समाज में महिलाओं का संघर्ष और युवा क्रांतिकारियों पर राज्य की क्रूर कार्यवाही का संघर्ष वर्णन किया गया है। यह एक ऐसी स्त्री की कहानी है जो बेटे की मौत के बाद खुद के अस्तित्व को पहचानती है, अपने होने के अर्थ को जानती है। उन्होंने समकालीन भारत में मातृत्व, दुःख और सक्रियता की जटिलताओंको पाठकों के बीच रखा है।

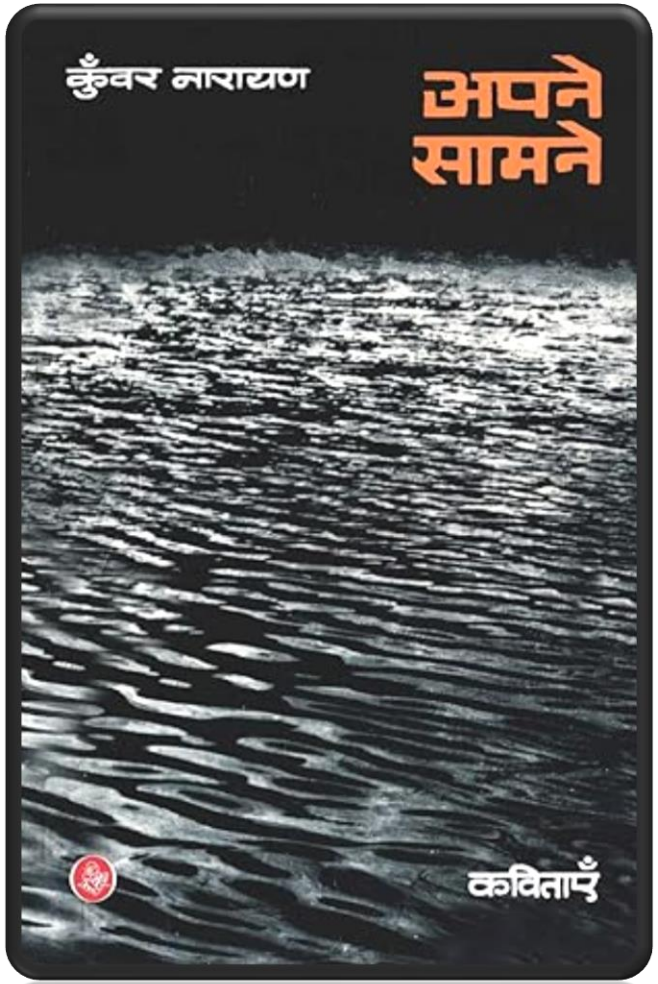

HB3055 - अपने सामने

लेखक- कुँवर नारायण

समकालीन कविता के समादृत कवि कुँवर नारायण का जन्म 19 सितंबर 1927 को उत्तर प्रदेश के फ़ैज़ाबाद जनपद के अयोध्या में एक संपन्न परिवार में हुआ। उन्हें वर्ष 1995 में साहित्य अकादेमी पुरस्कार और वर्ष 2008 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वर्ष 2009 में भारत सरकार ने उन्हें 'पद्मभूषण' से सम्मानित किया।

हिंदी कविता में कुँवर नारायण की उपस्थिति एक विलक्षण प्रतिभा के कवि के रूप में रही है। यह पुस्तक उनकी वही कुछ प्रमुख कविताओ का संग्रह है । कविता के साथ ही उनकी रूचि इतिहास, पुरातत्व, सिनेमा, कला, समकालीन विश्व साहित्य, संस्कृति विमर्श आदि में भी रही। इस रूचि ने उनकी रचनात्मकता को विविधता और बहुलता दोनों सौंपी है।

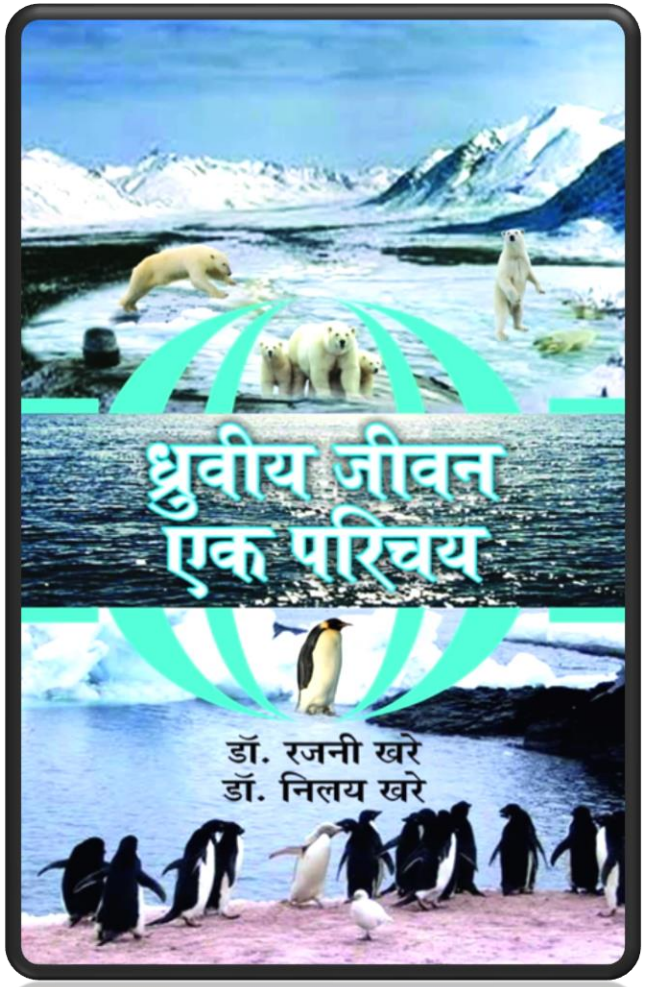

HB3052 - ध्रुवीय जीवन एक परिचय

लेखक- डॉ. रजनी करे और डॉ. नीलय करे

ध्रुवीय क्षेत्र अविश्वसनीय रूप से नाजुक हैं। जहां पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, जीव-जंतु और मनुष्य एक-दूसरे पर काफी निर्भर करते हैं। ध्रुवीय क्षेत्रों में जैविक और अजैविक कारकों के बीच गहरा संबंध है, इन क्षेत्रों में जीवन की मात्रा और विविधता, कम तापमान और वर्षा के कारण घट रही है। ऐसे क्षेत्रों में जीवित रहने के लिए चुनौतीपूर्ण परिस्थितियां सर्वथा बनी रहती हैं।

यह पुस्तक ध्रुवीय क्षेत्र के जीवन के बारे में बिखरी हुई जानकारी और उपर्युक्त महत्वपूर्ण तथ्यों के संकलन के आधार पर लिखी गई है। यह पुस्तक आर्कटिक, अंटार्कटिक और दक्षिणी महासागर जैसे ध्रुवीय क्षेत्रों के विविध जीवन को सरलता से समझने योग्य भाषा में लिखी गई है।

HB3054 - महाविद्यालय

लेखक- विनोद कुमार शुक्ल

विनोद कुमार शुक्ल एक आधुनिक हिंदी लेखक हैं। जो अपनी अतियथार्थवादी शैली के लिए जाने जाते हैं जो अक्सर जादुई-यथार्थवाद की सीमा पर होती है और कभी-कभी इससे आगे निकल जाती है। जिन्होंने 1999 में सर्वश्रेष्ठ हिंदी कार्य के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार जीता।

महाविद्यालय को शुक्ल जी की प्रतिनिधि कहानी माना जाता है जहाँ मनुष्य और बाज़ार का द्वन्द्व हमारे समय के विद्रूप का बखान करता है। 'आदमी की औरत' और 'मछली' शुक्ल के कथा-संसार का स्त्री पक्ष ही नहीं हैं, बल्कि यहाँ पितृसत्तात्मक विचार के विरुद्ध कथाकार की अपनी अर्जित की हुई दृष्टि है। 'महाविद्यालय' संग्रह की कहानियों की भंगिमाएँ कहानी के ख़ास शुक्ल-शिल्प का उदाहरण बन गई हैं।

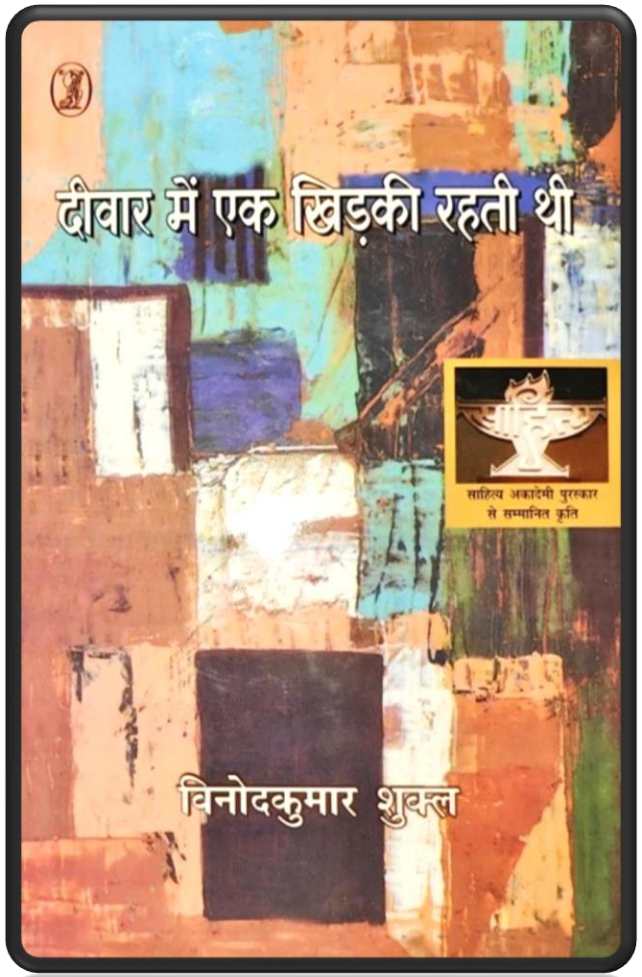

HB3061 - दीवार में एक खिड़की रहती थी

लेखक- विनोद कुमार शुक्ल

विनोद कुमार शुक्ल एक आधुनिक हिंदी लेखक हैं। जो अपनी अतियथार्थवादी शैली के लिए जाने जाते हैं जो अक्सर जादुई-यथार्थवाद की सीमा पर होती है और कभी-कभी इससे आगे निकल जाती है। जिन्होंने 1999 में सर्वश्रेष्ठ हिंदी कार्य के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार जीता।

पूरे उपन्यास में भारत के मध्यवर्गीय जीवन के ऐसे साधारण से हिस्सों का जिक्र है जो पढ़कर लगता है, कि यार सोच नहीं था इन चीजों को एक उपन्यास में डाला जा सकता है। कहानी एक छोटे से कस्बे के गणित के अध्यापक रघुवर प्रसाद और उनकी पत्नी सोनसी की है। उनका जीवन बहुत अलग है।